नोटिस ।

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथमाला के निम्न लिखित भाग तैय्यार हो चुके हैं ।

१ जिनेन्द्र भजन माला	... ...	।)
२ जैन भजन रत्नावली	... ...	।)
३ जैन भजन पुष्पावली	... ...	।)
४ पंच कल्याणक नाटक	... ...	।=)
५ न्यामत नीति	... ...	=)
६ भविसदत्ततिलका सुन्दरी नाटक	... ...	॥)
७ जैन भजन मुक्तावली	... ...	=)
८ राजल भजन एकादशी	... ...	-)
९ स्त्री गायन जैन भजन पचीसी	... ...	-)॥
१० कलियुग लीला भजनावली	... ...	-)॥
११ कुन्ती नाटक	... ...	=)
१२ चिदानन्द शिव सुन्दरी नाटक	... ...	॥=)
१३ अनाथ रुदन	... ...	-)
१४ जैन कालेज भजनावली	... ...	=)
१५ रामचरित्र भजन मंजरी	... ...	॥)
१६ राजल वैराग्यमाला	... ...	=)
१७ ईश्वर स्वरूप दर्पण	... ...	=)
१८ जैन भजन शतक	... ...	।)
१९ थ्येट्रीकल जैन भजन मंजरी	... ...	=)
२० मैनासुन्दरी नाटक	... ...	१॥)
,, ,, (सजिल्द)	... ...	१॥।)

पुस्तक मिलने का पता ।

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, हिसार (पंजाब)

न्यामत विलास—अंक १३

अनाथ रुदन

१

चाल—रघुवर कौशल्या के लाल, मुनि की यज्ञ रचाने वाले ॥

सुनियो भारत के सरदार म्हारी धीर बँधाने वाले ।
धीर बँधाने वाले, म्हारी धीर बँधाने वाले ॥ टेक ॥

देखो इस भारत के बीच, कैसी होगई किर्या नीच ।
बैठे हाथ दान का खींच, लाखों द्रव्य रखाने वाले ॥१॥

भूकों की नहीं सुनते टेर, उनको लालच ने लिया घेर ।
करते दया धरम में देर, धनको व्यर्थ लुटाने वाले ॥२॥

बनगये मुसलमान ईसाई, लाखों ने है जान गँवाई ।
होते कोई नहीं सहाई, म्हारे प्राण बचाने वाले ॥३॥

आये अब तुमरे दरबार, न्यामत दिलमें दया विचार ।
करो अनाथों का उद्धार, दयाका भाव दिखाने वाले॥४॥

२

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

दान दीजे मदद कीजे धरम तरुवर हरा होगा ।
ग़रीबों का भला होगा तुम्हारा भी भला होगा ॥ टेक ॥
यह करयुग है वह मूरख हैं जो कहते हैं इसे कलियुग ।
जो कोई जैसा करता है फल उसका बरमला होगा ॥१॥
सताता है ग़रीबों को दुखाता है किसी का दिल ।
देख लेना किसी दिन दार पै वह भी चढ़ा होगा ॥ २ ॥
दया करते हैं औरों पै वही सुख चैन पाते हैं ।
जो ज़ालिम खुद ग़रज़ होगा नहीं फूला फला होगा ॥३॥
खिलाता है जो औरों को उसी का दिल खिला होगा ।
जो छीले और के दिल को उसीका दिल छिला होगा ॥४॥
अनाथों को जो दुख होगा नहीं तुमको भी सुख होगा ।
अगर यह आह मारेंगे शहर जङ्गल जला होगा ॥ ५ ॥
यतीमों की, अनाथों की, ग़रीबों की ख़बर लेना ।
कहै न्यामत तुम्हें इसका किसी दिन फल मिलाहोगा ॥६॥

३

चाल—दिये दुख यह फ़लक ने भारे, चले छोड़ के राज बिचारे॥

दिये दुख यह करम ने भारे, फिरें घर घर दीन विचारे ॥ टेक ॥
हा ! लाखों हिन्दू भाई । बने मुसलमान ईसाई जी ।
हैं फूटे भाग हमारे । फिरें० ॥ १ ॥

यह पापी पेट हमारा, जो तजकर धर्म पियारा जो ॥
हुए यहूदी और निसारे । फिरें० ॥ २ ॥

कहो किस के ढिग हम जावें । अरु किसको विपति सुनावेंजी ॥
चलें ग़म के जिगर पर आरे । फिरें० ॥ ३ ॥

टुक करुणा चित्त में कीजे । कौड़ी पैसा जोहो सो दीजे जी ॥
हम माँगत हाथ पसारे । फिरें ॥ ४ ॥

नहीं लोगे सुधी हमारी । हो कर्म धर्मकी ख़्वारी जी ॥
अरु जावेंगे प्राण हमारे । फिरें० ॥ ५ ॥

दीनन को देना पैसा । नहीं और धर्म कोई ऐसाजी ॥
कहे न्यामत साफ़ पुकारे । फिरें० ॥ ६ ॥

४

चाल—यह कैसे बाल हैं बिखरे, यह सूरत क्यों बनी ग़म की ॥

अनाथों की मद्द करना कराना ही मुनासिब है ।
भूक से प्राण भूकों के बचाना ही मुनासिब है ॥ टेक ॥

भूर और बाग़बाड़ी में लुटाना धन नहीं अच्छा ।
दान देकर अनाथालय बनाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
बने हैं सैकड़ों भाई मुसलमान और ईसाई ।
धरम उन का तुम्हें यारो बचाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
कौड़ी पैसा जो कुछ चाहो सो देदीजे कृपा कीजे ।
धर्म के काम में धन को लगाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
दया जब से तजी तुम ने दशा बिगड़ी है भारत की ।
दया दुखियों पे अब करना कराना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥

तरक्की का ज़माना है नहीं है वक्त सोने का ।
कहे न्यामत ख़्वाब से सर उठाना ही मुनासिब है ॥ ५ ॥

५

चाल—है बहारे बाग़ दुनिया चन्द रोज़ ॥

पाप में धन का लगाना छोड़दो ।
छोड़दो बहरे प्रभु तुम छोड़दो ॥ टेक ॥
कुछ यतीमों की मदद मिल कीजिये ।
सख़्त दिल करना कराना छोड़दो ॥ १ ॥
दुख अनाथों को दिया तुम ने दिया ।
अब यतीमों का सताना छोड़दो ॥ २ ॥
धन लुटा कङ्गाल भारत को किया ।
व्यर्थ व्यय करना कराना छोड़दो ॥ ३ ॥
देश की चीज़ों से प्रीति कीजिये ।
दूसरे देशों का बाना छोड़दो ॥ ४ ॥
चुर्ट तम्बाकू ने भारत खो दिया ।
भंग चरस पीना पिलाना छोड़दो ॥ ५ ॥
अब परस्पर में प्रीती कीजिये ।
दूसरों के सिर भिड़ाना छोड़दो ॥ ६ ॥
फ़ैसले आपस में मिल करके करो ।
लड़ अदालत बीच जाना छोड़दो ॥ ७ ॥
नाच भारत को नचाया खूब सा ।
रण्डी भड़वों का नचाना छोड़दो ॥ ८ ॥
लुट चुकी सारी बहार अब हिन्द की ।
बाग़वाड़ी का लुटाना छोड़दो ॥ ९ ॥

न्यायमत उपकार औरों का करो ।
खुद गरज़ बनना बनाना छोड़दो ॥ १० ॥

६

चाल—पहलू में यार है मुझे उस की ख़बर नहीं ॥

सरदारे क़ौम जैन तुम्हें जय जिनेन्द्र हो ।
जय जय जिनेन्द्र हो तुम्हें जय जय जिनेन्द्र हो ॥ टेक ॥
जिन धर्म की बिगड़ी हुई हालत दिखायेंगे ।
बतलायेंगे उपाय भी जय जय जिनेन्द्र हो ॥ १ ॥
गर उन्नति चाहो तो अनाथों का पक्ष लो ।
और उनकी मदद कीजिये जय जय जिनेन्द्र हो ॥ २ ॥
बन जायेंगे अनाथ ही पण्डित वो लेक्चरार ।
नैय्या उभार देंगे यही जय जिनेन्द्र हो ॥ ३ ॥
विद्या के बिना उन्नति ख़्वाबो ख़याल है ।
कालेज को खोल दीजिये जय जय जिनेन्द्र हो ॥ ४ ॥
जागो विचारो वक्त यह सोने का नहीं है ।
न्यामत कहे पुकार उठो जय जिनेन्द्र हो ॥ ५ ॥

७

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

सुनो तुम जैन सरदारो ज़रा दिल में दया धारो ।
हमारी ओर भी साहब निहारोगे तो क्या होगा ॥ टेक ॥
दान देकर संवारे हैं हज़ारों काम औरों के ।
दशा बिगड़ी हमारी भी संवारोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥

यतीमों की पड़ी बेड़ी है आकर शोक सागर में ।
दया करके ज़रा उस को उभारोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥
दया जिन मत की है मशहूर हर मुल्कों में शहरों में ।
अनाथों पर दया साहिब विचारोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
तरक्की जैन मत चाहो अनाथों की मदद कीजे ।
विपत न्यामत यतीमों को निवारोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥

८

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

अनाथों का रुदन सुनिये ज़रा दिल में दया धरके ।
ध्यान करके ग़ौर करके कलेजे को थाम करके ॥ टेक ॥

उमर वाली गई लाली यह बदहाली न को वाली ।
मुसीबत कर्म ने डाली कहतसाली नाम धरके ॥ १ ॥
गया क़ारूं ख़ज़ाने छोड़ ख़ाली हाथ दुनिया से ।
जगत में यश ज़रा लीजे कोई यश का काम करके ॥ २ ॥
धरम को छोड़ जीते हैं समझ लीजे वह मुर्दा हैं ।
वह ज़िन्दा हैं मरे हैं जो कोई अच्छा काम करके ॥ ३ ॥
सदा रहना नहीं जग में किसी दिन यहाँ से जाना है ।
बुरा गुम नाम जाना है चलो जग में नाम करके ॥ ४ ॥
अनाथों की मदद कीजे दोऊ जग में सुयश लीजे ।
दया ही धर्म है न्यामत कहै तरत अज़ बाम करके ॥ ५ ॥

९

चाल—अब तुम बिन लछमन भय्या नय्या डूब चली मेरी ॥

नहीं सुनता कोई पुकार हमारी कहा करूँ भगवान ॥ टेक ॥

कहाँ हरिश्चंद्र से दानी बेचदई तारा सी राणी ।
बेच दिया रोहतास आप जा बसे हैं बीच मसान ॥ १ ॥

विश्नु कुमार मुनी सुखकारी दया धरमकी बात विचारी ।
धरकर बावन रूप मुनी का संघ बचाया आन ॥ २ ॥

बड़े बड़े धनाढ्य कहावें वे मतलब धन व्यर्थ लुटावें ।
कोई कहै धरम की बात नहीं वह सुनते देकर कान ॥ ३ ॥

सुनो अनाथालय सरदारो मत अपनी हिम्मत को हारो ।
कहै न्यामत हिम्मत रखो सुनेंगे कबलग नहीं धनवान ॥ ४ ॥

१०

चाल—फ़लक से अब शहे आलम, ग़ज़ब टूटा ग़ज़ब टूटा ॥

अनाथालय का यह जलसा मुबारिक हो मुबारिक हो ।
जैन दल को अपील इसका मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ टेक ॥

अनाथों की बिपति खोना धरम उपदेश का होना ।
दान के बीज का बोना मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ १ ॥

कामधेनू कलप तरुवर कहो चिन्तामणी क्या है ।
अनाथालय ! अनाथालय !! मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ २ ॥

दान ही सार जगमें है मगर किस को दान दीजे ।
अनाथों को ! अनाथों को !! मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ३ ॥

घड़ी धन आज की यह है सजन संगति धरम चरचा ।
कहै न्यामत आज का दिन मुबारिक हो मुबारिकहो ॥ ४ ॥

चाल—धूंटी लाने का कैसा वहाना हुआ। धूंटो लाने का ॥

कैसे कर्मों का ज़ाहिर में आना हुआ। कैसे कर्मों का ॥
सारा यकदम विगाना ज़माना हुआ। कैसे कर्मों० ॥ टेक ॥

मुए जननी वो भ्रात, रहा कोई ना साथ, दुखी दिन और रात
पिता तीरे अजल का निशाना हुआ ॥ १ ॥
हुए ऐसे अभाग, छोड़ा अपनोंने राग, दिया सबही ने त्याग,
भाव करुणा का दिलसे रवाना हुआ ॥ २ ॥
ऐसी हालत है आज, दाने २ सोहताज, कोजे कौन इलाज,
हाल आकर यहाँ पै सुनाना हुआ ॥ ३ ॥
अच्छे कुलके हैं वाल, काहे करते सवाल, जोन आता वबाल,
अब तो घर घर अलख का जगाना हुआ ॥ ४ ॥
वक्त विद्या अनुकूल, जासके ना सकूल, रहे नादान फूल।
वालापन का ज़माना वीराना हुआ ॥ ५ ॥
थे ये कर्मों के लेख, दुख पाये अनेक, टरे टारा न एक,
क़हतसाली का नाहक़ वहाना हुआ ॥ ६ ॥
होके भूके बेचैन, प्यारा प्राणोंसे जैन, तज धारा क्रूसचैन,
हाय लाखों को दुर्गति में जाना हुआ ॥ ७ ॥
सही जाय न पोर, होके आतुर अधीर, आये आपुके तोर,
यह समझ के कि अब तो ठिकाना हुआ ॥ ८ ॥
कहाँ पगपग निधान, राजाकर्ण महान, जग सेठ सुजान,
जिनका दान से स्वर्ग ठिकाना हुआ ॥ ९ ॥
हरिश्चन्द्र दातार, बेची तारासी नार, रोहतास कुमार,
दान देने में यकता ज़माना हुआ ॥ १० ॥

उनके कुलमें अबार, लिया तुमने अवतार, दान दीजे संवार,
जो हिसार में यतीमख़ाना हुआ ॥ ११ ॥
कौड़ी पैसा जो हो, करके करुणा सो दो, दूजा धर्म न को,
है ये भगवत का शासन बखाना हुआ ॥ १२ ॥
म्हारी जावेगीजान, होगी धर्मकीहान, घट जावेगीकान,
दान देने में गर कुछ बहाना हुआ ॥ १३ ॥
कहै न्यामत विचार, दान है जगमें सार, दोनों भवका शृङ्गार,
इसका फल स्वर्ग शिव सबका माना हुआ ॥ १५ ॥

इति अनाथ रुदन समाप्तम् ॥

Printed by W. D'Cruze at the Commercial Press Allahabad.—1918.